

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - अष्टम

दिनांक -15- 09 - 2021

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक - पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज अलंकार के बारे में अध्ययन करेंगे

अलंकार

अलंकार की परिभाषा

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है - अलम + कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है 'आभूषण।' मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवृत्ति के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

साहित्यों में रस और शब्द की शक्तियों की प्रासंगिकता गद्य और पद्य दोनों में ही की जाती है परंतु कविता में इन दोनों के अलावा भी अलंकार, छंद और बिंब का प्रयोग किया जाता है जो कविता में विशिष्टता लाने का काम करता है हालाँकि पाठ्यक्रम में कविताओं को अपना आधार मानकर ही अलंकार, छंद, बिंब और रस की विवेचना की जाती है।

उदाहरण- 'भूषण बिना न सोहई - कविता, बनिता मित।'

अतः काव्यों को शब्दों व दूसरे तत्वों की मदद से सुसज्जित करने वाला ही अलंकार कहलाता है।

अलंकार के प्रयोग का आधार

कोई भी कवी कथनीय वास्तु को अच्छी से अच्छी अभिव्यक्ति देने की सोच से अलंकारों को प्रयुक्त करता है जिनके द्वारा वह अपने भावों को उत्कर्ष प्रदान करता है या फिर रूप, गुण या क्रिया का अधिक अनुभव कराता है। कवी के मन का ओज ही अलंकारों का असली कारण होता है। जो व्यक्ति रुचिभेद आँँबर या चमत्कारप्रिय होता है वह व्यक्ति अपने शब्दों में शब्दालंकार का प्रयोग करता है लेकिन जो व्यक्ति भावुक होता है वह व्यक्ति अर्थालंकार का प्रयोग करता है।

अलंकार के भेद

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार
3. उभयालंकार